International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

गोविंद मिश्र के कथा साहित्य में मानवीय संबंध:

डॉ पूर्ण मल वर्मा
सह आचार्य,
राजकीय महाविद्यालय टोंक (राजस्थान)

हिन्दी उपन्यास कहानी व अन्य क्षेत्रों में मूल्यों को लेकर कथ्य भाषा बिम्ब प्रतीक उद्देश्य शिल्प शैली व मानवीय संबंधों और नैतिक मूल्य की चर्चा की है। जिसमें परिवार समाज राजनीति दांपत्य जीवन में नैतिकता का गिरता हुआ समीकरण यथार्थ घटनाओं को प्रस्तुत करता ह।आज के आधुनिक और नवीन भूमंडलीकरण में दूषित शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण युवा भटक रहा है।पुराने आदर्श नैतिक मान्यताओं को ध्वस्त किया जा रहा है।१९८३में लिखित कहानियों का समय था जब कम्युनिस्ट देशों में रूस और कम्युनिस्ट शासन का आतंक था। विष्णु प्रभाकर जी ने लिखा है कि इतिहास को प्यार और उसकी पीड़ा की रेशल अनुभूति है। लौटते में वह इधर से फिर गुजरेगी अपने जो जगह हमारे कीमती क्षणों में जुड़ी हूं वही उजड़ कर फिर से खड़े होना मैं सिहर उठा मैं भी सिहर उठा था। आने की चर्चा करें तो यह एक गांव की अनपढ़ महिला की कहानी है जिसका निश्चल प्रेम घर में घुसे चोरों की सीडी इधर शिर्डी दोस्त करता चला जाता है आखिरी में जो चुराकर कुछ ले जाने के लिए आए थे उनके लड़के को अपनी जेब से देकर जाते हैं। स्वर्णांजलि धर्म में प्रकाशित हुई थी

जिसमें शैलेश मटियानी ने इसके कहानी को कफ़न के समक्ष रखा। कहानी पर उनका विस्तृत लेख और एक पत्र भी डॉक्टर चंद्रकांत द्वारा संपादित है।कहानी समग्र भाग-1 की कहानियों में महकता अंधियारा,रोता हुआ ख्वाब,उड़ते तेज,बहकी बातें,चौखट ए हाजिरी,चिलमन दुआ, उपेक्षित,झपट्टा, चीटियां, अंतः पुर, कच्छ कौन,अपाहिज,गलत नंबर,जनतंत्र पढ़ाओ गिरे आदि जो कहानियां लिखी है।इन कहानियों के माध्यम से परिवार समाज और संस्कृति को प्रमुख संस्था के रुप में मान्यता मिली है। इन्होने सभी कहानियों मे मध्यम वर्गीय मानसिकता से ग्रसित मानवीय संवेदना को यथार्थ स्वीकृति प्रदान की ।इनकी कहानी व उपन्यासों में सामाजिक पारिवारिक जीवन में होने वाली टकराहट को लेकर कथ्य को नवीन स्वरूप में प्रस्तुत किया है। द्वितीय भाग में उन सब कहानियों में पारिवारिक सामाजिक एवं विभिन्न प्रकार की संवेदना ओं की अभिव्यक्ति स्पष्ट दृष्टिगोचर है जो भारतीय परिवार के लिए विविध प्रकार की संवेदनाएं से सरोकार रखने की बात कही हैं।

वर्तमान समय में रिलेशनशिप बनाकर मर्यादित भावना,पति पत्नी संबंध में होने वाली वैचारिक भिन्नता पारिवारिक संवेदना में परिवर्तन दांपत्य जीवन एवं वृद्धावस्था को आधुनिकता से जोड़ने वाली कहानियां और उपन्यास लिखे हैं।हमारे ज्ञान के आधार पौराणिक ग्रंथ एवं अध्यात्मिक क्षेत्र से धीरे-धीरे अलग

होते जा रहे है। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करते हुए वह मानववाद को छोड़कर भौतिकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है।अपने कर्तव्य बोध से परे होकर नैतिकता व मूल्यों के पतन की ओर बढ़ रहा है।आज के दकियानूसी क समाज को गर्त की ओर ले जा रहे है। जिससे समाज को आगे बढ़ाने वह उत्तरोत्तर वृद्धि की जहां संभावनाएं व्यक्त की जाती है वहां युवा आज खामियों से गुजरता समाज को स्तर हीन करता जा रहा है।साहित्यकार मिश्र जी ने अपने संपूर्ण कथा साहित्य में मूल्यों को चुनौती देते हुएआपस में जोड़कर मानव मूल्य रिश्ते आपसी संबंध एवं विचारों का संप्रेषण निम्न बिंदुओं के आधार पर किया है।

१ पति-पत्नी सम्बंन्ध:------यह सर्व विदित है कि पौराणिक काल से लेकर आज तक निरंतर समाज में सबसे महत्वपूर्ण चतुर वर्ग(धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) में उत्तम एवं सृष्टि के संचालन में महती भूमिका निभाता है वह है पति पत्नी संबंध या दांपत्य संबंध कह सकते हैं। हमारे यहां की परंपरा एवं आदर्श नियम है पति और पत्नी का रिश्ता अहं होता है। यदि यह रिश्ता मजबूत नहीं होता है तो गृहस्थी जीवन नारकीय हो जाता है। इस जीवन को समृद्ध करने के लिए दांपत्य जीवन को कई सामाजिक मर्यादाओं से गुजरना होता है तथा परिवारजनों समाज देश एवं सृष्टि के हर पहलू को समझना और उसकी अनुपालना करना आवश्यक माना गया है। जैसे ही ब्रह्मचर्य को पार कर और जब गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है तो उसको कई प्रकार के बंधनों से गुजरना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

होता है। उसे जीवन के विभिन्न माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों में फर्क केवल जनरेशन का मानना है। उन्होंने मेंटली नई जनरेशन और राष्ट्रीय जीवन जीने वाले आने वाली नस्ल के दिमाग की बात कही है। स्त्री-पुरुष संबंधों में किस प्रकार का औपचारिकता का व्यवहार रहता है वह दर्शाया है। आपकी वजह से मैं क्यों"अच्छा मैं कल अब जा रही हूं आप तो चलेंगे नहीं बहुत थके हैं शायद कोई बात नहीं खाने के लिए इंतजार न करिएगा। हां देखिए! जरा बच्चों को दूध पिला दीजिएगा क्या कर रहे हो लेटे हो बच्चों के साथ? श्रीमती क्या कहीं बाहर गई है? तुम जाकर शराब क्यों नहीं पीते धमकी देते थे ना कि मेरी शादी के बाद तुम देवदास बन जाओगे यहां पड़े क्या कर रहे हो जाओ किसी बार में तुम भी पैक छलकाओ।१औद्योगिकरण वैश्वीकरण की चलती दुनिया में स्त्री पुरुष संबंध की प्रीति इस प्रकार पहुंच गई है कि आज एक दूसरे की बिना परवाह किए हुए अपनी गृहस्थी को जी रहे हैं।एक और धर्मपत्नी दूसरी और माता पिता की सेवा।यह हमारे संस्कृति के संस्कार हैं जिन संस्कारों की हमे पालना करनी होती है। हमारे षोडश संस्कार पित्र कर्म श्राद्ध कर्म ऋण आदि को सेवा से ही संपन्न किया जा सकता है।समाज की स्थापना करने में दांपत्य जीवन का विशेष महत्व रहता है।यदि दांपत्य जीवन सुखी है,माता और पिता मिल करके और संतान को अच्छे मार्ग की ओर अग्रसर करते है तो भावी पीढ़ी भी उन्नत होती है। तथा आज्ञाकारी होती है। हमारे समाज में व्यस्त जीवन के लिए श्रीरामचरितमानस का अध्ययन अध्यापन मंगल कामना एवं विशिष्ट

संतानोत्पत्ति के कई मार्ग दिखाती है। कथाकार मिश्र जी के सभी साहित्य का यदि विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए तो निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उन्होंने परिवार और समाज दोनों पर पर्याप्त लिखा है। तथा समकालीन परिवेशगत चुनौतियों का अध्ययन करते हुए युवा भटकाव,उत्पीड़न,कुंठा,घुटन,

त्रासदी,वैमनस्य ओर ईर्ष्या आदि भावों की अभिव्यक्ति को सहज रूप में प्रस्तुत किया है।भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्टय,ऋणत्रय,सोलह संस्कार, चार आश्रम एवं गृहस्थी में दान पुण्य यज्ञ अनुष्ठान पुत्र संतान आदि की उत्पत्ति कारक क्रिया-कलापों का वर्णन है। मनुस्मृति श्रीमद् भागवत गीता श्री रामचरितमानस आदि ग्रंथों में सम्यक रूप से दृष्टिगोचर होता है।" उतरती धूप" सफल वैवाहिक जीवन का एक ज्वलंत उदाहरण है जो कि मिश्र जी ने अरविंद और 'वह' चरित्र के माध्यम से कथ्य चुना है और पारिवारिक संबंध सूत्र किस प्रकार उभर कर प्रेम की और समीप चले जाते हैं।सामान्य संवेदनाओं का हनन होता हुआ इस परिणति को प्राप्त करता है।'वह' और अरविंद का जो प्रेम है वह विवाह में बदलना चाहता है जो कि सामाजिक रूढ़ियों के कारण ऐसा संभव नहीं हो पाता है।देखिए"क्योंकि "उससे मारपीट कर शादी कर डालो जाए कहां जाएगी बाद में मां-बाप भी ठीक हो जाएंगे पर तब वह न रहेगी अपनी खुशी के लिए उसने कितनों को ठेस पहुंचाई यही उसे जीने नहीं देगा।"२गृहस्थी जीवन रूपी पहिया की गाड़ी में दोनो का यदि बैलेंस सही है तो गृहस्थी भली-भांति चलती

है।यदि एक पहिए का भी बैलेंस डग-मगा जाता है तो वह गृहस्थी रूपी गाड़ी खड्डे में गिर जाती है,और सब बर्बाद हो जाता है। हमारी संस्कृति और संस्कारों में दांपत्य जीवन की खुशी के लिए दोनों का एक साथ मिलकर एक दूसरे को समझना,विचारों में एक दूसरे को बहलाना तथाकथित समाज में सबसे महत्वपूर्ण बात है।पशारीरिक मानसिक और भौतिक सुखों में तथा मांगलिक कार्यों में साथ रहने पर जीवन सफल हो जाता है।कुछ ऐसे विचार के लोग होते हैं या तो पुरुष वर्ग या स्त्री वर्ग के विवाहेत्तर संबंध या विवाह पुरष संबंध होते हैं, जिसके कारण दोनों एक दूसरे को शक की निगाह से देखते हैं।जिससे घर में सदैव कलह बना रहता है। इन सब के पीछे मानवीय सोच मानवीय संवेदना मानवीय नैतिक मूल्य का विशेष महत्व रहा है। अधिकांश स्त्रियां शारीरिक और मानसिक तनाव सहती रहती हैं। पतियों द्वारा प्रताड़ित रहती हैं,किंतु पतियों से तलाक नहीं मांगती हैं। इस के पीछे सबसे बड़ा कारण है हमारे संस्कार मर्यादा तथा सामाजिक परम्परा प्रमुख कारण है।अरविंद 'वह' की स्थिति के बारे में सोचता रहता है तलाक तो नहीं क्योंकि उसके साथ में सोचने का अंदाज में उसके पति में था ना उसमें था। किसी में भी नहीं था पर दिमागी स्तर पर अलग अलग होना भी तो संबंध विच्छेद है।यह रास्ता सिर्फ औपचारिक अर्थ को छोड़ सब अर्थों में परिवर्तन की ओर ले जाने वाला है।३लाल पीली जमीन"उपन्यास में सामाजिक हिंसा के तले कई निर्णय कस्बाई परिवारों एवं पति पत्नियों युवा लड़कियों के साथ होने वाली दुर्व्यवहार को प्रस्तुत किया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

चंद्रकांत वाडेकर लिखते हैं "लाल पीली जमीन की लड़कियां अपने यौवन को भोग नहीं सकती थी यह दर्दनाक तथ्य लगभग हर नारी प्रमाणित कर देती है"४परिवार किसी सदस्य की तस्वीर नहीं अभी तो बस्ती की आम परिवार का प्रयोग होती है। हिंसा की वजह से यहां बच्चों का भविष्य अंधकार में है,क्योंकि बस आंखों के सामने उनका परिवार रहता है। और लग रहा है उनका परिवार इसी तरह से बेबस है। सुरेश खुलेआम बक्शी कह देता है" कसम तेरी लौंडिया बड़ी खुशी आगे कोई खतरा नहीं सिर्फ एक बार जी चाहता है।तुझे एक बार ही और तंग करूंगा तो तैयार हो जाएगी।"५ इस प्रकार पुरुष की कामवासना की पूर्ति के लिए चाहे छोटी बच्ची हो बड़ी या मात्र समान हो।अपनी नीच हरकतों से बाज नहीं आता वह अपनी कामवासना का शिकार बनाने की कोशिश करता है। "हुजूर दरबार"में सामंती व्यवस्था के दबाव में जीवन जीते परिवार की व्यथा को मिश्र जी ने महाराजा प्रताप सिंह जी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।सामंती परिवेश तथा राजगढ़ सरकार सरकारी सरकार और नेपाली सरकार के नाम से पुकारते हैं। इनके अलावा इसके अतिरिक्त अवैध संबंधों को भी दर्शाया गया है। रूद्र प्रताप और राधाबाई का प्रेम संबंध और उनका सुधा संबंध श्री राजा के पिता और भीलनी के संबंध आदि मिलते हैं। खानदानी राज शाही की लंपट का खून में प्रवाहित होने के कारण जिस स्त्री पर मन आ जाए उसे प्राप्त करके और उस दिन पास में रख कर भूल जाना राजघराने की अन्य जातियों के साथ संबंध रखना रूद्र प्रताप की लत है।६

राजा रानियों के यहां पति पत्नी संबंध अपेक्षाकृत कम रहता है। राजा प्रताप अपने सुख की बातें सिर्फ अपनी छोटी पत्नि नेपाल सरकार से करते हैं।अकेलेपन का शिकार होना और इसके साथ संबंध स्थापित करती है। इसलिए हरिद्वार मंदिर से नेपाल सरकार और उसकी निकटता के कारण मानसिक तनावपूर्ण स्थिति रहती है। हरीश को साधारण के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। "तुम्हारी रोशनी"शीर्षक उपन्यास में सुवर्णा, उसका पति रमेश और उसका दोस्त आनंद इन तीन के भीतर पूरी कथा घूमती है।वह दांपत्य जीवन के लिए कोई खतरा महसूस नहीं करती,क्योंकि वह अपनी सीमा रेखा भी तय कर सकती है।सब से उसकी सिर्फ दोस्ती हो सकती हैं वह प्रेम भी नहीं महसूस कर पाती। ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में महिलाओं का प्रेम महसूस विकसित करना पति के साथ कठिन कार्य होता है।स्वर्णा सोचती थी कि वह अपने पति रमेश से सबसे ज्यादा प्यार करती है,पर उसका रमेश से मोहभंग हो जाता है। चोर और पुलिस के दाम पर संबंधों के उतार-चढ़ाव के बीच एक स्त्री के दर्द और आत्मविश्वास को दिखाते हुए दाम्पत्य संबंध में होने वाले मन मुकाबले के विचार प्रस्तुत किया है।नैतिकता अनैतिकता से भी रूबरू होते हैं। सोना मॉडर्न लड़की है अपने कार्यालय के जीवन के साथ-साथ वह परिवार का भी देखभाल करती है।रमेश से प्रेम करती है तथा उसकी पुष्पा से भी दोस्ती हो जाती है। साथ संबंध विवाहात्मक है मेरा नाम पर उछलता के प्रश्न नहीं देती है

और उसको मारता है। सोना टूटती अपने अधिकारों के बारे में सोचती है उसे सुन करती है।भाषा की बड़ी संवेदना के साथ उपन्यास में बातों को बताया गया है।सोना के साथ अनंत होता है। जोशी समझाता नहीं सोना की कोशिश की आंतरिक सौंदर्य को पहचानता है। कार्यालय में काम करती हुई उस दोस्तों के साथ हाथ में हाथ डाल कर घूमना और अपने पति के सामने ही आनंद के साथ शराब पीने के लिए जिद करती है कि स्थिति बताई गई है "रमेश मुझे भी थोड़ी सी जगह थकी हूं।"७यहां पति पत्नी के रिश्ते में आने वाले संस्कारों एवं भारतीय आधुनिक स्त्री की पहचान को नई खोज या विचारों को सहज रूप से प्रस्तुत किया है। छोटी छोटी बातों से पति पत्नी में झगड़े होते हैं तो रमेश सुवर्णा को घर से लौटते समय कहता है मुझे लोगों से नहीं तुम से मतलब है तुम क्या कहती हो क्या सोचते हो तुम जानते हो कि मैं सब औरतों की तरह नहीं हूं मेरा अपना व्यक्तित्व है। नारी अस्मिता से पीड़ित शोषित नहीं रहना चाहती है वंदन स्वीकार करना नहीं चाहती है सोना का रमेश को छोड़कर जाना कहीं ना कहीं भारतीय परिवार की छोटी ग्रसित मानसिकता आधुनिक मूल्य संस्कारों से निर्मित है। अपने परिवार के साथ समाज में भी होने लगती है। भारतीय परिवारों की अवधारणा के संबंध में विष्णु प्रभाकर ने लिखा है कि घर की सारी जिम्मेदारियां पत्नी संभाले बाजार करें दृष्टि चलाएं यहां तक कि घर में खाना क्या? सजावट करना कौन पर्दे कहां?लगने यह भी वही देखे बच्चे स्कूल जाते हैं नहीं जाते पढ़ने में कैसे हैं? कमजोर हैं?तो क्या करना है यह सब टीवी देखें और

वह चाय पीता हुआ हुकुम चला दे किसानों को समय से घर पर आना चाहिए रमेश घर में पैसा जाता है तो वह भी लाती है तो फिर जिम्मेदारी बराबर क्यों नहीं?८प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से विवाह और नैतिकता के अंतर्संबंध को प्रस्तुत किया है।भारतीय समाज में विवाह एक संबंध का आधार नैतिकता है। पति-पत्नी को एक-दूसरे में विश्वास रखते हुए जीवन जीना होता है।सोना रमेश विवाहित है लेकिन रमेश स्वर्णा को अपने हिसाब की छूट देना चाहता है।सुवर्णा को सोचना है कि अपने बारे में बताया करेगी रमेश नहीं उपन्यास में दोस्तों पर दिखाया है।

पहला तो है कि रमेश सोना किस नेता को स्वीकारता है भले ही कुंठित मन से और दूसरा जवानों पर हावी होना चाहता है।उसे मारता धमकी देता है दोनों को मिलाकर देखें तो और क्या करेगा।अनंत सॉन्ग श्याम मोहन आदि से संबंध रखते हैं लेकिन चंद्रकांत कहते हैं कि"कुछ तीन इस दोस्ती में उसको मिलती है।इस दिन तक वह दोस्ती की को सीमित रखती है क्योंकि वह जानती है कि किस सीमा तक बढ़ने देना है उसके बाद वह निर्मम होकर उसे काट कर फेंक देती है"।९ भारतीय परिवारों में दाम्पत्य संबंधों के परिवर्तन पर विचार करते हुए" त्यागपत्र" के बाद मिश्र जी ने महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है।स्वर्णा के माध्यम से आज की स्त्री चरित्र के संबंध में दुख को बताया है।उसके प्रतिरोध की प्रक्रिया परिवर्तन के प्रमुख कारणों में पुरुषों की आकांक्षा को मारना है जो सदैव अपनी

औरत से कम देखते हैं। परिवार में स्त्री पुरुष की सहभागिता प्रबंध देते हैं आज की स्त्री के टकराव के अर्थ को उसके कारणों को भी रेखांकित करते हैं। इस संबंध में रंजन मिश्र लिखते हैं"किआधुनिकता की दौड़ में सम्मिलित होते हुए भी परंपराओं से मुक्त ना हो पाना भारतीय नारी की ऐसी मजबूरी है जो उसकी व्यक्तित्व को निरंतर विभाजित करती रहती है और वह अपने ढंग से अपनी शर्तों पर जीने की लालसा रखते हुए संकल्प करते हुए भी अपनी सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों की अनिवार्य परिणीति को स्वीकार कर लेती हैं"।१०" धीरे समीरे" में सफल दांपत्य जीवन की कथाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।हिंदी उपन्यास में सुनंदा और नंदन का सफल दांपत्य जीवन दिखाया गया है।पति के रूप में नंद गैर जिम्मेदार है, निकम्मा है फिर भी वह पत्नी पर अधिकार चाहता है।नंदन लेखक होने के सपने देखता है।अपने घर परिवार के लिए कुछ नहीं करता है।सुनंदा को बार बार कहने पर आखिर घर छोड़ देता है।नंदन के चरित्र के बारे में मिश्र जी ने लिखा है" कि विवाह के बाद उसने अपने मूल स्वभाव को पुरुष के अधिकार का रंग देना शुरू कर दिया कि पति की हैसियत बनाने के लिए पुरुष का अधिकार जताना बहुत जरूरी था।११नंदन और पत्नी सुनंदा के आपसी संघर्ष चलता है।दोनों के कारण परिवार टूटने की स्थिति में रहता है। "सुनंदा नंदन को ठोकर मारते कहती है तुम क्या मेरी देखभाल करोगे --------जो अपनी देखभाल नहीं कर सकता।--------पति नाम के छाते की मुझे जरूरत नहीं अब -------हटो-------।"१२सुनंदा स्वाभिमानी है वह अधिकारों

के प्रति सचेत है। वह समझती है कि उसे जरूरत नहीं है। मैं खुद अपना अच्छा बुरा सोच सकती है। परिवार का ध्यान रखने का दायित्व समझती है। इस तरह पति का छोड़ना भाटी परिवार मिश्र के अधिकार और मान सम्मान को स्थापित करता है" ध्रुवस्वामिनी" नाटक की चर्चा करते अधिकारों के प्रति सचेत किया था इस संबंध में लिखते हैं कि प्रारंभिक जीवन का प्रभाव क्या है प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी में सुनंदा और नंद प्रणोदक एम आंसर चित्रण को देखा जा सकता है सुनंदा के द्वारा नंदन को ठुकराना हिंदी उपन्यास में पत्नी की तरफ से क्रांति का बिगुल है।इसी को आधार बनाया है। रामप्रसाद और उसकी पत्नी के संबंधों को देख सकते हैं इस प्रकार पति पत्नी मिलकर रामप्रसाद अपने ही घर में बाहर निकाल देती है। उसे हुए बेटे को भी अलग कर देती है। रामप्रसाद पत्नी का अपने प्रेमी के साथ संबंध भारतीय परिवार का काला पक्ष है। वह ब्राह्मणी का अपने पति के प्रति प्रेम का उज्जवल पक्ष है। दीदी के लौट जाने को लेकर दूर-दूर तक कोई शिकायत नहीं ना कोई कड़वाहट प्रेम ही प्रेम। ऐसी क्षमता और मधुरता चेहरे पर।"११ राजन और छोटे बेटे उसकी पत्नी के साथ एडजस्टमेंट करने के लिए कहता है तो छोटू कह देता है वह आप की पीढी थी जब जमाने घुट घुट कर काटो ताकि बुढापे में एक दूसरे का सहारा बन सके हमें शुरुआत वहां चाहिए आप लोग एंड करते थे क्या फायदा अगर जिंदगी के अच्छे दिन एडजस्टमेंट करते-करते ही निकाल दिऐ है।१२

कथाकार ने माना है वर्तमान संदर्भ में शहरीकरण व भूमंडलीकरण के दौर औद्योगीकरणआदि के प्रभाव से भारतीय युवा पीढ़ी में जो परिवर्तन आया है वह दाम्पत्य सुखों में कष्ट खारक सिद्ध हुआ है।भारतीय परिवार में पाश्चात व्यक्ति की तरह अकेला चलने की एक धारणा हो गई है भारत में आत्महत्या और अपराधों का दल भी इसी कारण से बढ़ता जा रहा है रंजन और रमुआ स्थिति को अकेला होना आज के एकल परिवार की विडंबना दर्शाता है जो दांपत्य जीवन मूल्यों का ह्रास है। कोहरे में कैद रंग उपन्यास के माध्यम से मिश्र जी ने कस्बाई और महानगरीय दांपत्य जीवन में संबंधों की हकीकत को प्रस्तुत किया है जो अरविंदऔर उसके परिवार में महानगरीय परिवेशी तथा भूमंडलीकरण से प्रेरित विचारधाराएं हैं जिनमें रेवा और टट्टू मौसी जैसी आधुनिक नारियां हैं। उनके विचार बड़ी कठिनाई से सहन कर पाने की स्थिति में है। रेवा सरस्वती का विस्तार और सविता का नया रूप देखने को मिलता है। नानी का चरित्र आत्म निर्भर है।भारतीय परिवार में दांपत्य जीवन को देखें तो पति-पत्नी अरविंद और एक दूसरे के संबंधों में नीचा दिखाने वाली स्त्रियों की दशा बिगड़ती हुई दिखाई गई है। बात करें तो राजा की बेटी भौजी का मात्र तेरह साल की उम्र में विवाह कर दिया जाता है। शिरकत करने के लिए मिलती है और पीछे नहीं है परिवार में सास बहू के संबंधों में भी ध्यान रखा जाए और उसके साथ का संबंध भी कुछ ऐसा ही है। कोहरे में कैद रंग की "रेवा"का विवाह ऐसे शख्स हो जाता है जो जानवरों जैसा व्यवहार करता है ऐसा काम कुंठा से

ग्रसित होने के कारण उसके शरीर के साथ क्रूरता से पेश आता है रेवा अपने पति के बारे में अरविंद को बताती है"वह आदमी था जो एकदम सामान्य रहता था पर मुझे अकेले देखते ही हिंसक पशु में बदल जाता जैसे उसकी पत्नी नहीं पूर्व जन्म की कोई दुश्मन थी मुस्ताक जमीन जो दिखा उस पर पटक देता है ऐसे सवार हो जाते हैं इतना जोर से जहां कहीं भी चला जाता इधर उधर कहीं भी नाखून दासपा के था मुझे चिता चिता चला जाता है वह श्याम शक्तिशाली दिखाने की फिराक में होता और मेरा ध्यान अपने बचाव पर अब क्या करने वाला है ?और मुझे कैसे? उससे बचना है मैं रोती तो वह मुझे मारने लगता शरीर के लिए उसकी भूंक असीम थी एक देती की तरह कभी भी कहीं भी आ जाता मुझे कमरे में ले जाकर भीतर से बंद कर लेता और शुरू।"१३ भारतीय समाज में मध्यमवर्गीय स्त्रियों की जो स्थिति है वह बड़ी सोचनीय होती जा रही है। विशेष रूप से महानगरीय परिवेश का प्रभाव रेवा के चरित्र में मुख्य रूप से स्पष्ट झलकता है"तो कम से कम अपने जीवन का ध्यान रखते हुए फैसला लेती है।सरस्वती सावित्री और रात को वह कार्य नहीं कर पाते हैं लेकिन यह स्पष्ट है कि परसों में एकमात्र है शादी में औपचारिकता पूर्ण हो चुके अरविंद की तरफ आकर्षित होती है और करती है नहीं मिलता है।

देवधर उनकी तरफ आकर्षण विवाहेत्तर संबंध की तरफ इशारा करता है जो भारतीय परिवार में विवाह नामक संस्था की ही देन माना जाए तो टट्टू का

चित्र की भारतीय नारी की वस्तु स्थिति को प्रकट करता है।मिश्र जी ने संबंध में टट्टू मौसी के माध्यम से नारी वेदना को प्रस्तुत किया है। मुल्लू मामा और उनकी पत्नी के संबंध भी अजीब हैं अजब ने अपने पति को उसी स्थिति में देखा जिसमें सावित्री जैसी स्त्रियों को उनके पति रखते हैं।अपने पति का हर तरह से शोषण करती है।"मुल्लू मामा के पुश्तैनी घर में अजब और उनका मामा पति-पत्नी की तरह रहते और मुल्लू मामा उनके नौकर की तरह जैसी तनख्वाह मिली अजब झपट ली थी और फिर उसे चलता उसका और मामा का महीने भर का मुल्लू मामा को अपनी बीड़ी के बंडल के लिए भी पैसे क्रिकेट आकर मांगना पड़ता है।१४ ऐसे संबंध परिवार में जनप्रवास ना में स्वार्थ सिद्धि के लिए सारी सीमाओं को पार करती है तंत्र के साथ-साथ उसकी विद्रूपता को भी रेखांकित किया गया पुरुष ही नहीं स्त्री दांपत्य जीवन को खराब करने में शोषण करने के लिए पुरुष को मूर्ख बनाती है जो एक शब्द में बाधक माना गया है। यह परिस्थितियों के कारण भी होती देखी गई है दांपत्य जीवन में पहुंच जाता है।"उन पौधों पर "उपन्यास में युवा गुरु और उनका दांपत्य जीवन है वह है पति पत्नी संबंध ऐसा कुछ भी नहीं है। जबरदस्ती की शादी हुई है।मैं नहीं चाहता कि उस से प्रेम करें और पत्नी का लगाव सिर्फ उसके शरीर से लेकर करता है। केवल आदमी है पाखंडी है और महिलाओं का शोषण करता है अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर पाता। क्षमा गोस्वामी भारतीय परिवार के संबंधों में लिखती है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

"कि पति-पत्नी के मध्य वास्तविक रूप से प्रेम का विकास में परस्पर दायित्व देखभाल ज्ञान आदर सम्मान से संबंधित विभागों में ही विकास पा सकेगा।१५

वह और युवा गुरू के दाम्पत्य संबंध पूरी तरह से औपचारिक हैं जिससे पूरा परिवार प्रभावित होता है।उसमें परिवार की इच्छा है दीक्षा का कोई ध्यान रखा जाता है परिवार और घर की कल्पना केवल पति-पत्नी के संबंधों से ही होती है।आज शरीर के लिए शारीरिक संबंध कीअधिक आवश्यकता है। आज के समय में रिलेशनशिप बनाकर के बिना विवाह के रहना पुरुष की आंशिक सोच का प्रतीक है। केवल वह शारीरिक क संबंध बनाकर ही खुश रहना चाहता है। वह अपने कर्तव्य से भागता है जबकि उसकी पत्नी शिक्षित होना चाहती है। पढ़ना चाहतीहै तो उन्हें पढ़ाता।पति-पत्नी दोनों के अलग हैं युवा और यौन संबंधों को प्रमुखता है तो वहीं दूसरी तरफ वह प्रेम कथा भावना आदर को प्रमुख मानती है। मैं के सामने प्रतिकूल परिस्थितियां होने पर भी संबंधों को अनुकूल नहीं बना पा रही है दांपत्य संबंध को सुखी बनाने के लिए पति पत्नी दोनों पारस्परिक सहयोग आवश्यक होता है।किसी एक के उसको लक्षण से संबंध टूटने लगते हैं भारत के समाज में प्रबंधन के बावजूद स्त्रियां कितने शिक्षित हैं यह विषय बढ़ा चिंता करने वाला है।विवाह के उपरांत माता पिता को छोड़कर आती है उसके सानिध्य में रहते हैं टूट जाती है प्रेम प्रकाश के मध्य दूसरी तरफ युवा गुरु और निशा के मध्य प्रेम प्रकाश से प्रेम करती हैं जब प्रेम प्रकाश उसे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

खुद के बारे में और उसके भविष्य के बारे में स्वयं निर्णय लेने के लिए कहता है तब वह कहती है"मैं दोनों को ही नहीं समझती------- सोचने का अभ्यास ही नहीं हुआ क्योंकि शुरू से ही सोचने के लिए हतोत्साहित किया गया,अब तक।आप पहले आदमी है जिसने कहा कि सोचो। मैं फिलहाल पीएचडी करना चाहती हूं"।१६कथाकार वह के माध्यम से वर्तमान जीवन संदर्भ में जूती ही नारी की विषमता को प्रस्तुत करना चाहता है लेकिन वह खुद के प्रति आकर्षण में बन जाते हैं संस्कृत में प्रेम प्रकाश से हर प्रकार के सुख दुख का साथी बन जाता है और एक दूसरे का सहयोग करते हैं।युवा गुरु के तर्क भारतीय समाज के संदर्भ में स्त्री के किसी प्रेम संबंध को लेकर के और वह पाखंड करता है।वह भोग विलास में लिप्त रहता है। निशा और युवा गुरु पत्नी को छोड़कर चले जाने से लोगों ने उसकी प्रतिष्ठा पर सवाल उठाए वह को वापस घर लाने के लिए बेटे सिद्धार्थ का सहारा लेते हैं। उसे मां से फोन पर बात करने से पहले सिखाता है। मां से बोल तेरी बहुत याद आती है मां तू जल्दी आ! जा !इस प्रकार संतान के माध्यम से युवा गुरु को वापस बुला लेता है वह देखती है इतने दिन तक मैं बाहर ही रही सिद्धार्थ की जिंदगी बिगड़ चुकी थी मां बाप के अभाव में हिंदी छोड़कर मेरे पास नहीं था क्यों ग्रुप अपनी संतान से कोई लेना-देना नहीं उसकी मां कहती है पढ़ लिखकर जैसे बड़ा लाड साहब बन जाएगा।इस प्रकार छोटे से बच्चों को संस्कार देने की अपेक्षा उसको करा दिए गए हैं जो संस्कार हैं। वह बच्चों को मार्गदर्शन करने की अपेक्षा उनको हातात करते हैं उनको हॉस्टल में

दाखिला दिया जाता है यह संस्कार हैं।दांपत्य जीवन की लड़ाई के बीच में सिद्धार्थ जैसे बच्चों की स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। देखिए बेचारा मां-बाप के दो पाटों में फंसाया कौन पूछता होगा कि उसे बेटा तुझे क्या खाना है? तारिक संबंधों की परवाह किए बिना गुरु और वह इन दोनों के बीच आपसी तर्क कुतर्क होते हैं सब योग व अपने मां बाप के सामने कह देता है"आज साल होने को आ गया इसलिए अपना शरीर मुझे नहीं दिया हमारे शारीरिक संबंध नहीं है हम कहां की पति पत्नी हैं। १७ छा गई है परते जमा हो जाए फिल्म प्रेम प्रकाश के आगमन ने उस भूल को हटाया है प्रतिदिन संगत के लिए प्रेरणा तलसानिया साथ ही जीवन का हिस्सा बन गया उसके घर को बताकर उसके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है उसे नौकरी भी लगाता है।

"शाम झिलमिल की"में आधुनिक भारतीय परिवार में कथा नायक मै के माध्यम से दांपत्य जीवन में वृद्धावस्था तथा किसी का मेहमान की तरह रहना समस्याएं पारिवारिक जीवन में जहर घोल देती हैं।आज की पीढ़ी की संवेदना और नैतिकता मानव विश्रंखलित होने लगी है।पश्चात संस्कृति ने शून्य कर दिया और व्यक्तिगत केंद्रित हो गया है। पांडे जी का जो बड़ा बेटा है पत्नी के कारण अलग रहता है।पत्नी को चाहिए सास-ससुर से वह भी (मां-बाप से) दबकर नहीं रहना चाहती है क्योंकि अपने जीवन को अपना चाहती है। हालांकि बाद में दोनों एक साथ मिल जाते हैं किंतु दांपत्य जीवन में आने वाले दिखावे

को स्वीकृति प्रदान की है। शाम की झिलमिल उपन्यास के माध्यम से परिवार में दांपत्य संबंधों के निरंतर बदलती प्रक्रिया को दर्शाया गया है। नौकरी और उसके पति के संबंध के संदर्भ में परिवार के पुराने स्वरूप को दर्शाया है। नई संभावनाओं की तलाश की गई है।पति निकम्मा था नसे और नशे का सेवन करने वाला है। वह सही गलत का विवेक से निर्णय लेती है। लेकिन परिवार को बचाए रखने के लिए कोशिशों के बाद फिर भी मैं झेल रही थी पूरी जिंदगी उसके साथ बिताने को तैयार थी। एक ऐसी सुविधा के लिए क्योंकि सारा खर्च उठाऊंगी मैं काम करूंगी। करूंगी इतने दिनों चला भी अब उसने भी जहां कहीं उल्टी कर देना दर्द से भरा हुआ साफ करें तो घर के बाहर नौटंकी करता आस पड़ोस में उल्टी सीधी बातें करते निकाल कर बाहर घूमता सारी दुनिया को पता था। देखो मैं पत्नी से सिरफिरा हो गया।सब मुझे जलाने के लिए करता था।१८

दांपत्य जीवन में पत्नी को अधिकांशत उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। उसके मुख्य आर्थिक और मानसिक क्षमता के रास्ते से ही संभव हो पाती है संबंधित होने का प्रमुख कारण है आज पुरुष स्त्रियों में अपना अधिकार मांगते हैं। अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हैं तनाव की स्थिति पैदा हो जाती हैं। दाम्पत्य संबंधों को लेकर करने का एक कारण अनुविभागीय धर्म आर्थिक दृष्टिकोण की पहचान कर विभाग किया जाता है।"शाम की झिलमिल"बंदूक लेकर विभाग के माध्यम से अगले विभाग को दर्शाया है मेरा विवाह तो तुमसे भी खराब हुआ था

देसी गाय को बेल गाड़ी के पीछे बांध का दूसरे गांव ले जाया जाता है तीन साल की उम्र में अंतिम चरण में ढोल पीटा जाता था।१९ खुशी भारतीय परिवार में स्त्री की स्थिति को देखते रहता है। अंकित कहती है कि और चाहे जितनी पढ़ी लिखी हो चाहे जितने बड़े पद पर हो अगर विवाहित है तो विवाहित ही रहेगी मुख्य काम पति का मन लगाना पहले भी मैं क्या थी? पुरुषों के मन महिलाओं के लिए खिलौना।२०इस प्रकार गोविंद मिश्र जी के उपन्यासों में दांपत्य जीवन को लेकर विरोधी विचार व्यक्त

द्वारा उन्होंने समकालीन परिवेश के टूटते रिश्तों अध्ययन करते हुए स्त्री पुरुषों की मनोदशा, पारिवारिक विघटन संत्रास् से दुखित पति-पत्नी के संबंधों की बात को आमजन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। संसार के अनुसार का जानते हुए भी जीने के लिए आए हैं यह जीने का नशा पैदा करते हैं इसलिए बनाए जाते हैं बनाए जाते रहेंगे वरना जीना भी दूर हो जाएगा साधन के लिए वही रास्ता है आप पिताजी को पसंद नहीं करती थी पसंद घृणा करती थी मैंने तुम लोगों से कभी छुपाया भी नहीं कि जीवन अवसान बेला में जब मैं अलग रहने को गई तुमने यही कहा था याद है।

२ पिता पुत्र का संबंध:------

परिवार का मुखिया पिता होता है तथा पुत्र उसकी संतान पिता-पुत्र के संबंधों में मधुरता है तो परिवार का संयोजन भली-भांति चल जाता है।यदि पिता और पुत्र के संबंधों में मधुरता नहीं है तो उनका जीवन नारकीय हो जाता है क्योंकि हमारी सांस्कृतिक सामाजिक एवं वैधानिक परंपराओं के अनुसार पुत्र के बिना पिता की मुक्ति नहीं होती है। ऐसी परंपराएं रूढ़ियां हैं किंतु वर्तमान समय में दोनों की विचारधारा एवं उनके कर्तव्यों का निर्वाह नहीं कर पाते तो परिवार नरक हो जाता है। मिश्र के कथा साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर पिता और पुत्र के संबंधों की जो स्थिति है उसका विस्तृत विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत है। पिता पुत्र संबंधों की बात की जाए तो शाम की झिलमिल में लेखक ने अपने विचार व्यक्त किए हैं कि "मैं उस आदमी की गाड़ियां लात घुसा खाकर थक गई हूं जो वह जीवित था तब जैसे तैसे उसका साथ दिया क्योंकि मैं उसका बोझ तुम पर या किसी पर नहीं डालना चाहती थी। अब मेरी सहन शक्ति ने जवाब दे दिया है। कैसे आते कठोर सब तुम्हारी पत्नी से तुम से या तुम्हारे बच्चे से वह मुझे लेने जाते इसलिए मैं अकेले रहना चाहती हूं।तब तुम्हारा घर छोड़ते वक्त अगर शारीरिक रूप से तुम्हारे जैसे ठीक-ठाक होती तो क्या मैं पता कोई नया घर बनाने के लिए तुम निकल जाते हैं। तुम हो, उसका रंग,केदारी,बेवजह,करीमगंज का कलेक्टर आदि कहानियों के माध्यम से सुखदेव सिंह की गारंटी लॉकअप के रूम में उसकी विभाग के गेस्ट हाउस में ले

जाने दिया गया सुखदेव सिंह की जिम्मेवारी दूसरे दिन कोर्ट में लाया जाए इस बीच कहीं बाहर नहीं जाने देना। सपने व चिंगारी कशिश कहानी के माध्यम से सामाजिक समस्याओं एवं स्त्री पुरुष संबंध व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा वर्तमान संदर्भों को छूने वाली घटनाएं मिश्र जी ने मौजूदा स्थितियों पर बंदिश विवाह गृहस्थ जीवन एवं दांपत्य जीवन में हो रही टकराहट को बड़े ही सहज रूप में अभिव्यक्त किया है। यत्र धर्म:ओर नये सिरे से कहानी में सामाजिक संवेदना पारिवारिक विसंगतियां मध्यमवर्गीय पारिवारिक घुटन दांपत्य जीवन एवं वृद्धावस्था के समय संतान से मिलने वाली अपेक्षाओं की जगह उनको ताने मिलना जीवन यापन करने का संघर्ष आदि प्रस्तुत की गई।"जानता था कि राकेश अपने बच्चों को बहुत चाहता था बच्ची बड़ी तो उसकी लाडली थी कंधे पर उठाए उठाए घूमता रहता अब तेरह चौदह की हो गई है।लड़का उससे दो साल छोटा है। मैं रोहित के सामने ही पैदा हुआ था। उसकी परवरिश जरूर उससे नहीं देखी थी। वह अपने बच्चों से बहुत अटैच था। रोहित के मुंह से निकल गया था पर वैसा नहीं रहा था। इधर तो सालों के बच्चों में दूरियां हो गई थी। बहुत पीने लगा था कभी-कभी दिन में दफ्तर में ही ऐसे साथ गए थे घर आता तो किए हुए छत्रछाया सी रहती है"२१ पारो और देवदास जोकि "सतह का झाग" कहानी में वर्तमान प्रशासन व्यवस्था एवं दांपत्य जीवन में उत्पन्न विकृतियों को दर्शाता है। और ख्वाब देखता मुन्ना कुर्ते पेज भक्ति बातें इनमें मानव जीवन से जुड़ी संवेदना ओं को यथार्थ अनुमति प्रदान की है जो कि

वर्तमान परिदृश्य में साकार होती दिखाई देती है। जाति पाती धर्म संप्रदाय आदि से ऊपर उठकर आज की पीढ़ी में रत्ना के माध्यम से रूपा गुजरती हुई जिंदगी दब्बू स्वभाव तथा संतान के प्रति होने वाले व्यवहार आदि को यथार्थ गति प्रदान किया। शादी एक जिम्मेदारी है पूजा फिल्म दुस्तान में तो शादी आपकी निजी इच्छा हो को एक साथ में रखकर की जाती है उसमें क्या मजा।२२ कहानी समग्र भाग 1 गोविंद मिश्र ट्रस्ट 104 चर्चित कहानियों में रगड़ खाती आत्महत्या चिलम मन और दुआ बर्फीले पहाड़ों पर एक सड़क 2 तस्वीरें मजबूरियों के भूत आदि कहानियों में वर्तमान जीवन संदर्भों को कार्मिकों के माध्यम से अपने कर्तव्य के प्रति सच्चा और ईमानदारी से कार्य करने की अपेक्षा अधिकारों के अधिकारियों की चिरौरी करती हुई प्रतीत होती है। सर जी की वह दरियाई शहर कहानी खंडहर की प्यास नए पुराने मां-बाप उपेक्षित पीढ़ी दर पीढ़ी में जलने वाले संस्कृति एवं संस्कारों की विकृति पास्ता श्रद्धा का अंधानुकरण इन सब को मनो वेब से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

झूला" कहानी में पति को बकाए देहात ना पड़ता था मैं अगर नौकर को एक खींची हुई सुनता है मैं बुलाते थे तो उन्हें सुनती ही हो कहकर जोर से घंटी बजाते थे एक तरह से उन्हें जबरदस्ती घूमने को ले जाते पीछे-पीछे अपने हलके शरीर को भी करोड़ ते हुए चलती रहती पति बैठकर सुस्ताने को कहते तो बैठ जाती तब तक बैठी रहती जब तक वह पति आवाज नहीं दे देते पति के

कहने पर फिर चल पड़ती उस तरह उन्हें चलते हुए देखकर अक्सर ऐसा लगता था जैसे लेडी मैकबेथ बगैर मोमबत्ती के नींद में चलती जा रही हो ऐसा लगता था जैसे उन्होंने हर क्षण सिर्फ एक ही तलाश थी नींद की जैसे उन्हें सालों से सोने को नहीं मिला।"गोविंद मिश्र कहानी समग्र भाग 2 झूला कहानी पृष्ठ 42 खुद के खिलाफ शीर्षक कहानी के माध्यम से दांपत्य जीवन में होने वाली आहट छोटे से घर में विमला के माध्यम से एक दूसरे को परिवार में मन से कलुषित विचारों का आपस में घरेलू तनाव का कारण बन्ना देखा गया है पति-पत्नी फरीदाबाद में जमीन ले लेते हैं जब घर में बैठे होते तो उनके संवाद किस प्रकार के हैं एक का एक ही पतिदेव चीज को आए और खुद को बड़े ए की मात्रा तरह की खुशी पर सीधा करते भोले अच्छा जी आप तो छोटे हैं कहां बाहर खाएंगे नहीं खाएंगे कुछ मीट सीख ले आता हूं तब तक आप लोग कुछ प्यार वार करिए दस रूपए खाने के सामान के लिए और बीस से ही दे दीजिएगा ड्रामे के बाद।

इस प्रकार गोविंद मिश्र जी ने अपनी कहानियों में छोटी-छोटी समस्याओं सामाजिक पारिवारिक संघर्ष पति पत्नी संबंधों में एक दूसरे के प्रति मौका समाप्त होना प्रीति मोह माइकल लोबो सुनंदो की खोली सिर्फ इतनी रोशनी अर्थ ओझल आसमान कितना नीला निष्काम में धुंधडका यूं ही खत्म अवरुद्ध आदि कहानियों के माध्यम से दांपत्य जीवन में आने वाली विविध समस्याओं को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

तथा तिवारी संवेदना माता पिता के प्रति समर्पण बहन भाई के रिश्ते एवं संतान के प्रति होने वाले विचारों को यथार्थ स्वीकृति प्रदान की है।"धुंधला पीला"कहानी है जिसमें आर्थिक समस्याएं सामाजिक एवं पारिवारिक संवेदना स्पष्ट परिलक्षित है।भारतीय परिवारों में बदलते मूल्य और संस्कृति के परिदृश्य को भी वैसी जी परिस्थितियों को उद्घाटित करना मिश्र जी का ध्येय है। आज की युवा पीढ़ी भारतीय मीडिया टीवी इंटरनेट आदि मोबाइल के माध्यम से समाज की संस्कृतियों से परिचित होती जा रही है।इनके संबंध भारतीय समाज और संस्कृति से दूर दूर तक नहीं था इसी कारण आज भी भारतीय मीडिया एक ऐसी मिश्रित संस्कृति को अपना रही है जिसके कारण आज भारतीय परिवार का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।आज बड़ों के प्रति सम्मान नहीं है छोटा के प्रति प्रेम नहीं है।इसका कारण रहा दूरदर्शन पर प्रसारित अश्लील वीडियो व दृश्यों विज्ञापन बढ़ते हुए हिंसात्मक दृश्य और मोबाइल का कारण प्रमुख।भारतीय परिवार में वृद्धों का महत्वपूर्ण और सम्मानित स्थान है।किन्तु अधिकांश समय परिवारों के साथ बिताता है परिवार में उत्सव महोत्सव तीज त्यौहार आदि के नेतृत्व में संपन्न होते हैं। जैसे संयुक्त परिवार एकल परिवार में आया है वैसे ही परिवार में वृद्धों की स्थिति सोचनीय होती चली जा रही है। वृद्धों का जीवन मानो ऐसे लगता है जैसे हाशिए पर खड़ा कर दिया हो। क्षमा गोस्वामी लिखती है की "वर्तमान समय में व्यक्तिगत अवसरवादी ता व्यवसायिक था और गतिशीलता ने भी परिवार के वृद्ध जीवन को कम क्षति

नहीं पहुंचाई है।"२२ रुद्रप्रताप के दो परिवारों की अप्रत्यक्ष टकराहट व परिवार की जटिलता को दिखाया गया है। अरे इसका परिवार और उसके दो पिया राजपूत दरबार को जोड़ें रखी है एक तरह से गुलाम नहीं है उनके मन में राज दरबार के भक्ति इस तरह रो किसकी है वह तक प्रतिरोध नहीं कर पाते हैं मां साहिबा का हरीश के पिता का कहना है।इसे राजमहल के लिए रहने दो।फिकर ना करो, यह सुरक्षित रहेगा।इस पर राजकुमार की छांया पड़ चुकी है। यह बाहर कहीं नहीं पनप सकेगा।ईश्धर के विधान का संकेत समझो महंत जी यहीं पल ने दो हमारे लड़के लड़कियां ------क्या सभी मसूरी भेजे जाते हैं ?फिर से कोई जंट् साहब बनना है क्या! बड़ा होगा तो तुम्हारी गद्दी ही तो लेगा तब तक नहीं रानी भी आ जाएगी।२३ उनका कहना है कि परिवार के दबाव के कारण धूर्तता को दर्शाता है। आम भारतीय परिवार की मानसिक गुलामी का पता चलता है।आर्थिक गुलामी के प्रति हरिश के पिता से बोलते हैं कि किस तरह बर्बाद कर रहे हैं।अप ने हमारी बहिन की जिंदगी बर्बाद की हैअब उस मासूम लड़के को भी होम करने पर तुले हुए हो।"२४ के माध्यम से परिवार को एकजुट रखना कठिन ही नहीं असंभव है। यहां धन्ना लाल के द्वारा धन की लालसा तथा दहेज की कानपुर से परिवार को दिखाया अपने बेटे लंदन बंदा से इसलिए दूर रखता है क्योंकि उन्हें शादी में दहेज नहीं और मैं अपने बेटे की दूरी से के शादी करना चाहते हैं। एक पिता की अपने पुत्र वधू के प्रति घृणित सोच स्पष्ट परिलक्षित होती है। ताकि भैया जात से कोई सा न ले सके नंदन के लेखक बनने की धुन में

ही पिता के धन की लालसा के वजह से लंदन और सुनंदा का परिवार करता है वापस पिता के पास आने के बाद धन धन से मिलने जाना चाहता था। सुंदर में मिश्रा जी ने बताया है कि सुनंदा बहू के रूप में केवल इसलिए माने नहीं थी कि लड़के ने चुपचाप विवाह कर लिया बहुत ही नहीं लाई विवाह हो गया क्योंकि सुनंदा और उसकी मां गरीब है।इसलिए जमनालाल की संपत्ति के लालची हो गए।२५ धीर समीरे प्रश्न संख्या 201 धन के साथ दहेज जैसी कुप्रथा को भी लेखक ने दर्शाया है अता पारिवारिक विसंगतियां पैदा करने में कभी-कभी माता और पिता का भी रोल होता है इसे यह भी प्रतीत होता है पता है सुनंदा जैसी लड़कियों को संघर्ष करना उनके जीवन का भी बन जाता है अपना चाहते हैं अपनी बहू को बेच रहे थे कहां ले जाएंगे इतना पैसा ऊपर कोई बैंक नहीं है।२६ वही 203

उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार ने कुछ ऐसे माता-पिता हैं जिनकी प्रकृति है उसके बारे में उन्होंने बताया है की निर्मला बहन अपने घर का बटवारा नहीं किया तो उनके दोनों बेटे मानते हैं कि मां की ममता नहीं है मां बेटे के संबंधित से परिवार में आदर्श माना जाता है इस धरातल पर गिर गए हैं नैतिक मूल्य की पराकाष्ठा भर चुकी है कुछ को जरूरत से ज्यादा अपने बच्चों को देते हैं और इसी कारण बच्चे बैठने लगते हैं और फिर बाद में जरूर आना हो तो माता-पिता और बच्चों में तनाव और भैंस भी होती है इस प्रकार का धन का अधिकार

दिखाना है भारतीयता का प्रभाव है। स्टार की कलुषित मानसिकता के कारण पारिवारिक जीवन में कंटक पैदा हो जाता है या विक्रम हो जाता है जिसके कारण की पारिवारिक विद्रोह बढ़ जाता है और धनुष यथार्थ बोध की रोशनी में दिखाते हैं जिसके कारण परिवार आत्मीय संबंधों के स्थान पर स्वार्थ का संबंध बन कर रह जाता है। पारिवारिक दृष्टि के कारण महिला की स्थिति दयनीय हो जाती है सतना बहन रथयात्रा होकर आती है छोटा सीटों से पकड़ता है मंजुलाबेन अमीर घराने की औरत है परंतु पति हमेशा विदेश घूमते रहते हैं और घर के लड़के बहू भी उसे छुटकारा पाना चाहते हैं उजाला बहन की समस्या पदों के प्रकार की व्यथा है जो जीवन के अंत में आते-आते महसूस करते हैं। पांच आंगन वाला घर है जिसमें तीसरी पीढ़ी है और टूटने के कगार पर है कालखंड की तीसरी पीढ़ी में संकलित होने का एक बड़ा कारण प्रशासन सभ्यता का बढ़ता हुआ प्रभाव है उस के माध्यम से हैं। साजन के माध्यम से परिवार के प्रथम को बहुत ही बारीकी से चित्रित किया है परिवार के कारण तेजी से बदल जाता है। एकल परिवार के अंतर को स्पष्ट किया है। उपन्यास में राजन की व्यवस्था आज भारतीय परिवार के अधिकांश मां-बाप की व्यवस्था है। परंपरागत जीवन मूल्यों का दो दर्जन के माध्यम से अधिकार भारतीय परिवारों के दर्द को साक्षात्कार कराता है। परिवार में जब पीढ़ी दर पीढ़ी मिलेगा परिवर्तन होते हैं तो संबंधों में भी तेजी से परिवर्तन होता है पहली पीढ़ी में राधेलाल दस ग्राम के लिए घर छोड़कर जाते हैं दो साल बाद अपनी पत्नी से

मिलते हैं तो उन्हें भला-बुरा कहने के बजाय उनके पैर छूती और कहती है आपका यज्ञ यज्ञ आपसे अलग कहां रहूंगा शांति देवी इस बात का बुरा नहीं मानती है और अपने उनके चाचा को घर में रखने से मना कर देती है और ओमी छोटी सी बात पर ना एक दूसरे के प्रति रखना है। रमई बार कहती है भाई साहब गिन कर ले ले बार-बार सुनाने की जरूरत नहीं है।२७ "धूल पौधों पर" में सिद्धार्थ चाहता है कि उसके मां-बाप एक साथ रहे अपनी मां से कहता है तुम टीचर हो यहां भी तो हो सकती हो कितने सारे स्कूल हैं यहां मेरे साथ रहो नेमा तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लगता।"२८ यहां बच्चा छोटा होते भी माता-पिता से अधिक समझदार प्रतीत होता है। वहअर्पिता को दोषी नहीं मानता बल्कि मां को दोषी मानता है क्योंकि उसका ममता के प्रति ज्यादा समर्पित है।मां में निष्ठा करता है भावना एवं ममता के माध्यम से वह दोनों को मिलाना चाहता है।"शाम की झिलमिल" में कथा नायक में गायब हो जाता है घरवालों की परेशानी महसूस नहीं होती वह जानता है अग्नि के गायब हो जाने के कारण नहीं बल्कि उससे उत्पन्न होने वाली परेशानी को लेकर परेशान थे कथा नायक के स्वर में अपने बेटे से कहता है "उस पर किसकी नजर है यह तो नहीं पता है पर उसकी नजर जरूर उस पर है यह जाहिर हो गया।"२९ शाम की झिलमिल पृ २९ कुत्ते फर्क दिलचस्पी बजरंग शुरुआत दोस्त जिहाद ढलान पर व्यवस्थित बांध दौड़ एवं झपट्टा आदि प्रतीकात्मक कहानियों के माध्यम से वर्तमान समाज में दूषित शिक्षा प्रणाली संस्कार एवं दांपत्य जीवन में आ रही

कठिनाइयों का मूल हेतु व्यक्ति की पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण एवं संस्कार हीनता मूल्य हीनता प्रमुख कारण माना है। भार्गव परिवार के माध्यम से वृद्धों की दशा का वर्णन बताते हैं कह रहा है कि जो माता-पिता अपना सर्वस्व देकर अपने बेटे बहू के लिए घर लेते हैं उसी में किस प्रकार को मेहमान

सन्दर्भ ग्रन्थ

१गोविंद मिश्र:कहानी समग्र भाग १पृष्ठ ८९-९०

२गोविंद मिश्र:उतरती हुई धूप पृ ३७

३गोविन्द मिश्र:उतरती धूप पृ ९१

४संपादक चंद्रकांत वामदेव टेकमिश्र सरन के आयाम पृष्ठ ९८

५ गोविंद मिश्र लाल पीली जमीन:चुनी हुई रचनाएं भाग१पृष्ठ ३०७

६ संपादक रामजी तिवारी:आकलन गोविंद मिश्र पृष्ठ ८०

७ गोविंद मिश्र:तुम्हारी रोशनी में पृष्ठ ५१

८चंद्रकांत वांदिद्डेकर:गोविंद मिश्र का ओपन्यासिक संसार पृ५४

९संपादक चंद्रकांत वांदिदडेकर:गोविंद मिश्र सृजन के आयाम पृ१७०

४गोविंद मिश्र के उपन्यास और भारतीय परिवार अमृत कुमार पृ ५२

७"चंद्रकांत वांदिद्डेकर गोविंद मिश्र का ओपन्यासिक संसार पृ५४

८संपादक चंद्रकांत वांदिदडेकर गोविंद मिश्र सृजन के आयाम पृ१७०

९ गोविंद मिश्र धीर समीर

१०गोविंद मिश्र धीर समीरे पृ

११ गोविंद मिश्र धीर समीरे पृष्ठ १७८

१२ गोविंद मिश्र पांचआंगन वाला घर पृ१९७

१३ गोविंद मिश्र कोहरे में कैद रंग १४५

१४ गोविंद मिश्र कोहरे में कैद के रंग ११४

१५ क्षमा गोस्वामी परिवार में सौहार्द पृ ३०

१६गोविन्द मिश्र धूल पौधों पर पृ४३

१७गोविन्द मिश्र धूल पौधों पर पृ१०३

१८ गोविंद मिश्र शाम की झिलमिल पृष्ठ ५८

१९गोविन्दन्शाम की झिलमिल पृष्ठ २४

२०गोविन्द मिश्र शाम की झिलमिल पृष्ठ १४१

२१ंगोविंद मिश्र कहानी समग्र भाग- ३ नए सिरे से पृ३००

२२ क्षमा गोस्वामी परिवार में सौहार्द पृ ११

२३ गोविंद मिश्र हुजूर दरबार पृ२१